नशामुक्ति हित गाबी गीत

कल्पना झा



नशामुक्ति हित गाबी गीत

कल्पना झा



कल्पना झा

मूल्य : ₹200

नवारम्भ
पटना/मधुबनी
navarambhprakashan@gmail.com
www.navarambh.com

नशामुक्ति हित गाबी गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

(मैथिली गीत-संग्रह)

कल्पना झा

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध

ISBN : 978-93-934042-1-3

नशामुक्ति हित गाबी गीत
(मैथिली गीत-संग्रह)

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : 200 रु.

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Nashamukti Hit Gabi Geet
A Maithili Lyrics By **Kalpana Jha**
First Edition : 2022, Price : Rs 200/-

पतिदेव श्री सुधीर कुमार झाकेँ
ई पुस्तक समर्पित।

—कल्पना झा

गीत-क्रम

साहित्यक एकटा अनिवार्य दायित्वक निर्वाह करैत 'नशामुक्ति हित गाबी गीत'

साहित्यकेँ समाजक अएना कहल जाइत रहलैक अछि। हमरा हिसाबेँ साहित्य जीवनक अएना थिक; साहित्य जीवन (जाहिमे मानव समाजो सम्मिलित अछि)क सभ नीक-बेजाय पक्षकेँ अपनामे समेटैत अछि, ओकरा देखार करैत अछि; समसामायिक साहित्यक एकटा उद्देश्य जत' एक दिस वर्त्तमान मानव-जीवनक कष्ट, संत्रास, कुंठा, विकृति, भय, घृणा, नकारात्मकता आ आशंकाकेँ चित्रित क' केँ लोकक सोझाँ आनब छैक, ओतहि एकर ई दायित्वो छैक जे ई जीवनमे शान्ति, सुख, सकारात्मकता, संतोष, प्रेम आ सहृदयताक महत्वकेँ रेखांकित करय आ जन-सामान्यकेँ जीवनक सही दिशा देखयबाक गम्भीरतासँ प्रयत्न करय।

'नशामुक्ति हित गाबी गीत'मे कवयित्री कल्पना झा एहने साहित्यक सृजन कयलनि अछि जे एक दिस निसाँक नकारात्मक पक्षकेँ खोलिक' पाठकक सोझाँ आनैत अछि आ दोसर दिस नशामुक्त समाजक निर्माणक दिशामे आगू बढ़बाक आवाहन करैत अछि।

कोनो प्रकारक निसाँ करब व्यक्ति आ मानव-समुदाय लेल नीक नहि होइत छैक, से बात तँ बुझले छैक सभकेँ, तथापि पृथ्वीक सभ भागमे, सभ समाजमे, कोनो-ने-कोनो रूपमे निसाँ करबाक प्रचलन पूर्वहुसँ रहलैक अछि आ वर्त्तमान समयमे सेहो छैक। एहि सूचीमे भांग, तमाकुल, गाँजा, शराब, अफीम, चरस, हेरोइन, कोकीन, मारिजुआना आदि अनेक प्रकारक निसाँक वस्तु सम्मिलित अछि... मुदा सूची एतबे धरि नहि अछि। वर्त्तमान समयमे नशाक लेल कोन-कोन रसायन कोन-कोन रूपें प्रयोगमे आबि रहल अछि, तकर सम्पूर्ण जनतब देब ने संभवे अछि आ ने से विस्तृत विवरण एतय वांछिते अछि।... कोनो-कोनो परिस्थिति-विशेषमे नियंत्रित रूपमे निसाँ सकारात्मक प्रभाव द' सकैत अछि, मुदा ई तँ ध्रुव-सत्य अछि जे अनियंत्रित निसाँ सभ समयमे, सभ समाजमे अपन नकारात्मके प्रभाव रखलक अछि, व्यक्तिक प्रतिभाकेँ कुंठित कयलक अछि, परिवारकेँ दुःख आ विपन्नताक

पोखरिमे धकेललक अछि आ समाजकेँ कमजोर बनौलक अछि। एहि क्रममे देश आकि राष्ट्रक उन्नतिक तँ कोनो विचारे संभव नहि अछि।

मुदा इहो सत्य अछि जे एतेक नकारात्मकताक बावजूद निसाँ करबाक चलन मानव-समुदायकेँ ग्रसने अछि। वर्त्तमान समयमे तकर कारण अछि बेसीसँ बेसी पाइ कमाबय लेल नशीला पदार्थ सभक विश्वव्यापी व्यापार आ तस्करी। सम्पूर्ण विश्वमे जाहि वस्तु सभक सभसँ बेसी व्यापार भ' रहलैक अछि ओहिमे अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर शस्त्रास्त्रक व्यापार आ वन्यजीव-जन्तु (ओकर विभिन्न अंग समेत)क तस्करी आदिक संग निसाँ बला पदार्थ सभक तस्करी सम्मिलित अछि। एहि काजमे सैकड़ो-हजारो नहि, लाखो-लाखक संख्यामे लोक लागल अछि, से सभकेँ बूझल छैक— सर्वज्ञात तथ्य छैक ई। मैक्सिको सनक देशमे एकर की स्थिति छैक आ निसाँकेँ पैघ-पैघ सौदागर सभ कोना करोड़ो नहि, अरबो-खरबो टाकाक मालिक बनि सम्पूर्ण विश्वमे एकर अवैध व्यापार चला रहल अछि, सेहो सभकेँ बूझल छैक। खेत-खरिहानसँ ल' क' छोट-पैघ कारखाना धरि नशीला पदार्थ सभक उत्पादन, ओकर पैकेजिंग, ओकर वितरण-व्यवस्था, ओकर तस्करी, निसाँक थाल-कादोमे युवा वर्गकेँ फँसाबक अनेक अवैध उपाय सभक सम्बन्धमे सूचना अपना सभकेँ दिन-प्रतिदिनक प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक आ विभिन्न सोशल मीडियासँ भेटैत रहैत अछि।

एहन बात नहि छैक जे नशाक एहन अवांछित पसारकेँ रोकल जेबाक कोनोटा प्रयास स्थानीय आकि वैश्विक स्तरपर नहि कयल जाइत हो। मुदा एकर अवैध व्यापारक जे विशाल अर्थतंत्र छैक से सभ तरहक प्रतिरोध सभकेँ आ वर्जना सभकेँ झमारिक' अपनासँ दूर करैत आ झटकारैत एहि व्यापारकेँ निर्बाध रूपेँ चलबैत रहैत छैक।

विश्वक अधिकांश देशक अधिकांश भागमे निसाँ पैघ स्तरपर सामाजिक व्यवस्थाकेँ पैघ क्षति पहुँचेलकैक अछि आ आइयो पहुँचा रहल छैक। पंजाबमे निसाँक कारण युवावर्गक की दशा भ' गेलैक अछि, से ककरोसँ नुकायल नहि अछि। मुम्बइ, कोलकाता, चेन्नइ, दिल्ली, बैंगलोर, पुणे, नागपुर, पटना, राँची कोनो महानगर आकि पैघ शहरक नाम लिय, ओतय नशाक सिंडिकेट अपन पयर पसारने अछि, मात्र विश्वविद्यालये आ महाविद्यालयेक परिसर नहि, स्कूल सभक परिसर एहि निसाँ सभक सौदागर लोकनिक चपेटमे आबिक' त्रस्त

अछि। बूझल जा सकैत अछि जे देशक युवावर्ग आ छोट-छोट बच्चा (किशोर) सभपर केहन भयानक संकट मड़रा रहलैक अछि।

ई भेल महानगर सभक आ शहर सभक हाल। मुदा ग्रामीण भारत सेहो एहि संकटसँ बाँचल नहि अछि। आन जगहक की चर्च करी, ई देखियौ जे मिथिलाक गामे-गाममे की दारूक 'पाउच' भेटय नहि लागल अछि? सुदूरसँ सुदूर इलाकमे सेहो की छोटसँ छोट चौक-चौराहापर गुटखा, तमाकुल, बीड़ी, सिगरेट, 'पाउच' आदि आनो-आन निसाँक चीज वस्तु सभ भेटि नहि रहल अछि?... आ एहि वस्तु सभक की निधोख भ' क' खुलेआम उपयोग नहि कयल जा रहल अछि? आ ई नशीला पदार्थ सभ की समाजमे अपन नकारात्मक प्रभाव नहि द' रहल अछि?

जतय धरि सरकारक भूमिकाक गप्प छैक, तँ से त' बिहारमे कानून बनाक' शराबक सेवनपर निषेध पछिला कएक बर्खसँ लागू छैक मुदा एहि कानूनक प्रावधानकेँ ठेंगा देखाक' पीब' बला लोकसभ दुगूना-तिगुना दामपर दारू किनिए रहल अछि आ ओकर सेवन क' रहल अछि। एहन लोक सभकेँ ने जहलक डर छैक आ ने अर्थदण्डक! एहि परिस्थिति सभक विश्लेषणसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे सरकारी व्यवस्था चाहे किछु क' लौक, जाबत धरि जन-सामान्य स्वयं अपन मोनसँ नशाक परित्याग नहि करत, ताबत धरि एकर प्रचलन रूकि नहि सकैत अछि। खास क' क' युवावर्गकेँ निसाँक प्रकोपसँ बचायब बहुत जरूरी छैक, अन्यथा समाजक अपूरणीय क्षति हेतैक, एहिमे कोनो संशय नहि छैक।

आब विचारी जे एहि विषयपर साहित्यक किछु दायित्व छैक की नहि? यद्यपि ई तथ्य दुखद छैक जे हम अनेक एहेन 'साहित्यकार'केँ जनैत छियनि, जिनकर सरस्वती बीड़ी-सिगरेट धुआँ आकि दारू आकि आन प्रकारक निसाँक सेवन कयलाक बादे अवतरित होइत छथिन। मुदा एहि ठाम एहन साहित्यकार लोकनिपर बिना कोनो टिप्पणी कयने कहबाक अछि जे जखन साहित्यक ई दायित्व मानैत छी जे साहित्यकेँ जीवनमे शांति, सुख, सकारात्मकता, संतोष, प्रेम, सदाशयता आ सहृदयता लेल प्रयास करबाक छैक, तखन तँ निसाँक सेवन सन समाज लेल खतरनाक विषयपर साहित्यक रचना क' केँ (खास क' युवा वर्गकेँ) सही दिशा देखायब आवश्यके नहि, अनिवार्य-सन लगैत अछि।... आ से कवयित्री कल्पना झा द्वारा रचित

पछहत्तरि गोट रचनाक ई संग्रह 'नशामुक्ति हित गाबी गीत' एकटा महत्वपूर्ण प्रस्थान-बिन्दु लगैत अछि। नशामुक्तिक महत्वपूर्ण विषयपर दूटा-चारिटा रचना कयल गेल होयत अवश्य पहिनहुँ, मुदा मैथिलीमे एकटा पोथीक रूपमे मात्र निसाँ-मुक्तिपर आधारित रचना सभक संग्रह देबाक आन कोनो प्रयास भेल हो, से हमरा ज्ञात नहि अछि।

एहि पोथीक संदर्भमे कहबाक अछि जे कोनो साहित्यकेँ देखबाक अनेक दृष्टि भ' सकैत अछि। कोनो रचनाक 'कथ्य' एक गप होइत छैक आ ओकर 'स्वरूप' देसर गप्प। रचनाक गढ़नि, ओहिमे प्रयुक्त शब्द सभक चमत्कार, विभिन्न अलंकारक प्रयोग, बिम्ब सभक प्रयोग, उपमा-उपमेयक प्रयोग, गेयता, छन्द आदि-आदि रचनाक स्वरूपक विभिन्न पक्षसभ होइत छैक। एहि पोथी 'नशामुक्ति हित गाबी गीत'क पचहत्तरि गोट रचना सभकेँ जँ ओहि सभ कसौटीपर कसिक' देखबाक प्रयास हेतैक, तँ अनेक त्रुटिसभ भेटि सकैत छनि विद्वान लोकनिकेँ।

मुदा हमर दृष्टि भिन्न अछि एहि रचना सभकेँ देखबाक। हम एकर भौतिक रूप-रंग नहि देखि रहल छी। बिटियाक' एकर सुगन्धिक अनुभव क' रहल छी आ देखि रहल छी एकर उपयोगिता। जेना अष्टावक्रकेँ, हुनक अंग सभक टेढ़-टूढ़ रहलाक बादो, प्रकाण्ड विद्वानक कोटिमे रखबामे कोनो धड़ी-धोखा नहि, तहिना एहि रचना सभक साहित्यक उपयोगितामे कोनो संशय नहि। कवयित्रीकेँ जे बात सभ कहबाक छनि, से सभटा बात रचना सभ कहैत छैक। कहैत छैक सीधा-सीधी, सरल शब्दमे, सहजतासँ। कतहु कोनो लाग-लपेट नहि। यैह एहि रचना सभक विशेषता छैक।

एकटा आर गप्प छैक ध्यान देबय जोगर। एहि रचना सभक 'टारगेट ग्रुप'मे के सम्मिलित छथि?... जे एकर 'टारगेट ग्रुप' छथि, हुनका सभ लेल तँ सरल आ सोझे भाषाक आवश्यकता छैक ने! तखने ने एहि पोथीक उपयोगिता सिद्ध हेतैक।... ई पोथी आनन्द देब' लेल नहि लिखल गेल अछि, ई परबोधय लेल लिखल गेल अछि। गलत रस्ताक वर्जना करैत सही रस्ताक पहिचान करबाक आह्वानक संग लिखल गेल अछि। हमर विश्वास अछि जे एहि पोथीक रचना सभ अपन उद्देश्यमे सफल होयत, किएक तँ रचना सभमे आन कमी रहितहुँ संप्रेषणीयताक कमी नहि छैक। एतय दू टा रचना देखल जाय!

सुनू युवकगण चित्त लगाय
गप कहब सभकेर हितलाय
रजनीगंधा, पान मसाला
भरमाओत, बहलाओत भाय
व्यसन, दुर्व्यसन अति बलाय
पाश अपन जँ लेत फँसाय
भेटत बात नहि कतहु पड़ाय
कानब पुनि-पुनि मन पछताय
छूटत ने कथमपि कोनहुँ उपाय

गुटखा खेलियै चुप्पेचाप
सड़लै जबड़ा बाप रौ बाप
करियै कोन उपाय आब हम
किछु नहि फूरय बाप रौ बाप
डॉक्टर-वैद्यकेँ जोड़ल हाथ
जबड़ा कटलक बाप रौ बाप
देलन्हि विधाता कंचन काया
सेहो गमौलियै बाप रौ बाप
धनक संग समांग गमौलियै
माथा धुनै छी बाप रौ बाप

एहि पोथीक पी.डी.एफ. फाइल उपलब्ध कराक' हमरा एहिपर अपन मंतव्य आ कि भूमिका लिखबाक आग्रह कयल गेल छल। पोथीक रचना सभक मूल विषय केर अत्यधिक महत्व आ उपयोगिताकेँ देखैत हम अपन विचार एतय व्यक्त कयल अछि।

हम कवयित्री कल्पना झाकेँ एहि विषयक चयन करबाक लेल आ ओहिपर लागिक' पचहत्तरि गोट रचना करबाक एहि गम्भीर प्रयासक लेल हार्दिक बधाइ दैत छियनि। ई पोथी शीघ्रे लोकक हाथ धरि पहुँचत आ अपन उपयोगिता सिद्ध करैत प्रशंसित होयत, से विश्वास अछि।

कुमार मनीष अरविन्द

दारूक विरोधमे पहिल संग्रह

नीतीश कुमारक सरकार द्वारा लगाओल दारूबंदीपर मिथिलामे प्रतिक्रिया होयब स्वाभाविक अछि। जतेक लोक ततेक मंतव्य। किछु गोटे कहता कि दारूबंदीक आदेश एकदम निष्प्रभावी अछि। जेना भगवान कतहु देखाइत नहि छथि मुदा सर्वत्र व्याप्त छथि, तहिना दारू बिकाइत केओ नहि देखैत अछि मुदा जिनका चाही, उपलब्ध अछि। दोसर कहता जे ई सरकारक ढोंग अछि। सब ठाम देशी दारू बनैत छैक आ विदेशी बिकाइत छैक। ई सबटा पुलिसक कमाइक लेल बनाओल गेल अछि। तेसर कहता जे सरकार अपने नहि चाहैत अछि जे दारू बंद होए, कमाइक स्रोत भ' गेल छैक। थाना, पुलिस, मजिस्ट्रेटसँ ल' क' कोर्ट-कचहरी धरि दारूक केस-मोकदमा छैक। सीमा परहक भगवानक सेहो बेसी पूजा भ' रहल छनि। बाबाधाम, काशी आ जनकपुर लोक मात्र पूजा-पाठ करैक लेल नहि जा रहल छथि।

मुदा सरकारक समर्थनमे बेसी लोक छथि। तर्क सेहो अकाट्य छनि। हम नहि पीबैत छी त' कहाँ कियो आबिक' कहैत अछि जे दारू पीबू। एकटा दारू बंद भेने जेना समाज शांत भ' गेल। बर-बरियात के कहए, मुर्दघटीमे सेहो बिना दारूक कोनो काज नहि भ' सकैत छल। कतेक गोटे दारू पीबैत-पीबैत मुइलाह, कोनो गिनती नहि। ओहि घरक स्त्रीगण आ बच्चा सबहक हाल देखू, जत' पुरुष कमाइत कम छल आ दारू बेसी पीबैत छल। जहियासँ बंद भेलै, लोकक हुलिए बदलि गेलै।

मिथिला पंचमकारक धरती अछि। एहिठाम पंचदेवताक पूजा होइत छनि। महादेवक पूजाक बेसी महत्व। कारण, औढरदानी त' सबहक कष्ट दूर करैत छथिन। महादेवकेँ भांग पसिन्न छनि आ से भक्त हुनक पूजा भांग-धथुरक संग करैत छथि। दुनू चीज नशाक स्रोत अछि। मुदा सरकार भांगक उपयोगपर बंदिश नहि लगौलक। एखनहु मिथिलामे भांगक उपयोग मात्र नशाक लेल कएल जा रहल अछि। एहिमे आमजन दोषी नहि छथि। हमर बुद्धिजीवी समाज पाग-डोपटा आ सम्मान-पुरस्कारमे व्यस्त

छथि। भांग औषधीय पादप अछि। समाजमे एकर बहुत उपयोग छैक आ से मात्र मानवक लेल नहि। मुदा मिथिलाक भांगपर शोध कएनिहार सबहक ध्यान एहि दिस नहि जा रहल छनि। जँ भांगक विविध उपयोगक मादे मिथिलाक खेतिहर वर्गकेँ नीकसँ जनतब देल जाए त' भांग एकटा नकदी फसिल बनि जायत।

मिथिलामे एमहर किछुए दशकसँ दारूक एतेक प्रचलन भ' गेल छल। एहिठाम पहिने ताड़ी चलैत छल आ लोक भांगक सेवन करैत छलाह। मुदा जहियासँ दारूक प्रचलन बढ़ल, सब चीज उनटा-पुनटा भ' गेल।

श्री नीतीश कुमारक सरकारक दारूबंदीक निर्णयसँ मिथिलामे सर्वत्र आनंद छैक। कोनो एहन घर नहि अछि जाहि ठाम सरकारक एहि निर्णयसँ सकारात्मक परिवर्तन नहि आयल अछि। लोक जँ स्वयं परहेजी रहत त' कोनो तर्कसँ ओ परास्त नहि भ' सकैत अछि। नशाक असर संपूर्ण परिवारे नहि, सौंसे टोल आ गामपर पड़ैत छैक। दारू शरीरक नाश करैत छल। संगहि चरित्र, आत्मा, बुद्धि आ विवेकक सत्यानाश करैत छल।

जखन अंग्रेजी सरकार छल तखनहु दारूक सेवनकेँ नीक नहि मानल जाइत छलैक आ ताहि समयमे सेहो दारूक सेवनकेँ हतोत्साहित करबाक लेल नियम-कानून बनाओल गेल छल। 1915 ई.मे बनाओल गेल कानून ओतेक असरकारी नहि रहैक मुदा तकरा बाद बिहारहि नहि अन्य राज्यमे सेहो मद्यनिषेधसँ संबंधित कानून आदि बनाओल गेलैक। बिहारमे सरकार द्वारा पूर्ण शराबबंदीक निर्णय सेहो लेल गेल अछि मुदा सरकारी मशीनरी द्वारा एकर कार्यान्वयनपर हमेशा संशय प्रकट कएल जाइत रहल आ अंततः पूर्ण शराबबंदीक कानून वापस ल' लेल गेल। मुदा वर्तमान सरकारक दृढ़निश्चय एखन धरि एहि कानूनकेँ टससँ मस हेबाक अनुमति नहि द' रहल अछि आ ई शुभ संकेत अछि।

आमजनकेँ एहि विषयपर सरकारक समर्थन करबाक समय आबि गेल छैक। ग्रामीण बुझैत रहैत छथिन जे फलां टोलमे देशी दारू बनैत छैक, फलां व्यक्ति दारूक व्यापारमे लागल अछि। मुदा झंझटमे पड़बाक भयसँ ओ आँखि-कान मुनने रहैत छथि। मुदा एहिसँ की हेतैक! जँ दारू जीततै त' आम आदमी हारत।

एहन परिस्थितिमे कल्पनाजीक ई रचना शीतल बसात सन आनंदित

करैत अछि। अपन रचना ल' क' दारूक विरुद्ध एहि तरहक होहकारा देनिहारि ओ मैथिलीक प्रथम कवयित्री छथि। दारूक प्रचलनसँ समाजमे कोन तरहक असरि छलैक आ एहि प्रकोपसँ घरक महिला आ धिया-पुता कोना प्रभावित होइत छल, एकर विस्तृत वर्णन एहि कविता संकलनमे झलकैत अछि। सामान्यतः कविताकेँ जनपक्षधर मानल जाइत छैक। कवि वा कवयित्री लोकनिक धर्म छैक जे आम जनक उन्नतिक लेल मुखर बनतीह। एहि क्रममे जँ हुनकर लेखनी शासन-व्यवस्थाक प्रतिरोध करए त' कोनो हर्ज नहि। मुदा ई पोथी पूर्णतः दारूबंदीक समर्थन करैत अंततः सरकारक निर्णयक पक्षधर बनल अछि। दारूक विरोधमे बिहारक आन कोनो भाषा अथवा बोलीमे एहि तरहक प्रकाशनक मादे हमरा जनतब नहि अछि, हमरा बुझने ई पहिल संग्रह अछि। एहि प्रयासकेँ हम प्रशंसा करैत छी आ कवयित्रीकेँ हार्दिक बधाइ दैत छी।

विश्वास अछि जे साहित्य जगत एहि प्रयोगक स्वागत करत।

भैरव लाल दास

पटना

.

भावाभिव्यक्ति

किये पुछलन्हि– 'भगवान भेटताह त' अहाँ की वरदान माँगब?' हम झट द' कहलियन्हि– 'हमरा जँ भगवान भेटताह त' हम माँगब जे नशाक व्यसनसँ समस्त मानवकेँ मुक्ति दियौन्ह।'

नशा केर दुष्परिणाम कतेक हानिकारक होइछ ताहिसँ सभ परिचित छीहे। नशा कोनो हँसैत-खेलाइत जीवनकेँ कोना तहस-नहस क' राखि दैत छैक सेहो कहबाक कोनो बेगरता नहि। जवान आ बूढ़क कोन गप, आजुक नेना सभ सेहो भाँति-भाँतिक नशामे आकंठ डूबल रहैत अछि।

घर-घर पैसल एहि दुर्गुणक नफा-नोकसान नेनपनेसँ देखैत सुनैत आ भोगैत आबि रहल छी। तेँ त' बेबस मोन समय पाबि हिलकोर मारैत रहैत अछि जे किछु त' सुकृत्य करितहुँ जे कहुना मानव नशाक व्यसनसँ त्राण पाबि सकैत! काश हम एहिसँ बचावक कोनहुँ उपाय जोहि पबितहुँ! परंच सदति अपनाकेँ असहाय, असमर्थ पबैत छी। बेबस हारल मोन किलोल क' उठैत अछि जे हे भगवती! किछु त' बाट देखाउ! हृदय द्रवित भ' फाटय लगैत अछि आ बाहर होइत अछि किछु 'शब्द।' ओहि शब्द सभकेँ गीतक रूपमे सहेजि अहाँ लोकनिक समक्ष प्रस्तुत करैत छी। मोनमे एगो आश ल' क' जे किये त' हमर द्रवित हृदयक पुकार सुनत!

देखल जाइछ जे नशाक लति संगी सभक संग खेल-खेलमे लागि जाइत छैक। जावत लोक किछु बुझि-गुनि पाओत तावत ओ व्यसनी बनि चुकल रहैत छथि तखन त' यैह जे 'अब पछताये होत का जब चिड़िया चुग गई खेत!'

नशा केर तरी-घट्टी सभ जनिते छी त' आओर ज्ञान बाँचब उचित नहि। हँ, एहि व्यसनसँ मुक्ति कोना पायब ताहि लेल जँ किछु कहल किंवा गूनल जाय तकरे टा बेगरता छैक।

बिहार सरकार शराबबन्दी लेल बड़ ठोसगर निर्णय लेलक जे स्वागत योग्य अछि, बहुत रास नशामुक्ति केन्द्र सेहो सुचारू रूपे चलि रहल अछि। आब निर्णयक बेर हमर नशेरी भाइ-वन्धु आ बहिन लोकनिक छन्हि जे ओ लोकनि अपन जीवन आ स्वास्थ्यक प्रति कतेक जागरुक होइत छथि।

सरकारसँ हमर कलजोड़ि निहोरा जे भांग सन विनाशकारी वस्तुकेँ सेहो नशीला पदार्थ घोषित क' ओहूपर ध्यान देथि। बिहार राज्यक मिथिलाक प्रत्येक गाम भांग-गाजाक चपेटमे पड़ि पंगू बनल जा रहल अछि।

ओना त' नशा मुक्ति केर रंग-विरंगक उपाय भारत सरकार आ राज्य सरकार द्वारा अनवरत होइते रहैत अछि परंच जा धरि व्यक्ति अपने नहि अपन महत्व बूझत ता धरि सभ व्यर्थ।

हमसभ देशक भविष्य छी, हमरे सभसँ देश आ समाज छैक। एकर ध्यान हमरा सभकेँ राखब अनिवार्य अछि तेँ कोनो तरहक नशीला पदार्थक उपयोग कखनो नहि करबाक प्रण ली। संगहि नव-नौतारि आ युवकगणकेँ यथासंभव जागरूक क' मजबूत राष्ट्रक निर्माण हेतु सभटा नशीला पदार्थक समूल नष्ट करवाक संकल्प संग शपथ ली।

'नशामुक्ति हित गाबी गीत' पोथी लिखब हमर छोट सनक प्रयास कतेक सफल रहत कहि नहि, परंच हम हारि नहि मानब आ निरंतर अपन प्रयासमे लागल रहब।

सर्वप्रथम हम हृदयतलसँ आभार व्यक्त करैत छी आदरणीय कुमार मनीष अरविंद जीकेँ जे समुचित भूमिका लिखि सामान्य सन पोथीकेँ पूर्णता प्रदान कयलन्हि। कोटि-कोटि आभारी छी अपन सम्पूर्ण हित-मीतक जे सदति हमर प्रेरणा स्रोत बनि, हमर मार्गदर्शक बनि नीक बाट देखबैत रहैत छथि। आदरणीय हितनाथ भाइजीकेँ कोटि-कोटि नमन, वन्दन अभिनन्दन आ प्रणाम! केहनो विपरीत परिस्थितिमे सदिखन सजग आ आशावादी बनल रहबाक लेल प्रेरित कयनिहार आदरणीय भैरव लाल दास जीकेँ हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी। सदिखन हमर हौसला बुलंद करबाक लेल आ सत्यक बाट देखेबाक लेल, पोथी प्रकाशन सन जटिल प्रक्रियाकेँ क्षणहिमे सहज बनेबाक लेल हृदयसँ आभार, धन्यवाद आ प्रणाम आदरणीय अजित आजाद सरकेँ।

प्रत्यक्ष किंवा परोक्ष रूपें सदति हमर सहयोग लेल हम अपन समस्त सखा-बन्धुकेँ कोटि-कोटि नमन, वन्दन प्रणाम आओर अभिनन्दन करैत छी।

सुधीजनक स्नेहाधीन

कल्पना झा

.गुरु पूर्णिमा

16 मइ 2022

1

बौआ रे किछु अम्मल डेबलें
कऽह कोन तों बाट पकड़लें

थोपड़ी पाड़िकऽ रगड़ए हाथ
आ कि लैत छें सुइया गाँथि

चुटकीसँ चटकाबए जीह
आ कि लैत छें नाकमे सूंघि

आगि बारिकऽ धुआँ उड़ाबें
आ कि लैत छें घट-घट पीबि

बाट कोनो धऽ चलमे धाय
जीवन भरि तों कटमे काहि।

2

सुनू वन्धुजन, सुनू यौ मीत
नशामुक्ति हित गाबी गीत

मन भरमाबए घऽर उजाड़ए
सकल जगत केर चैन चोराबए

संतापक थिक प्रियगर मीत
नशा मुक्ति हित गाबी गीत

नशा छी बड़का नरकक द्वार
कंचन काया करत लाचार

आधि-व्याधि संग जोड़त प्रीत
नशा मुक्ति हित गाबी गीत।

3

सुनू युवकगण चित्त लगाय
गप कहब सभ केर हितलाय

रजनीगंधा, पान मसाला
भरमाओत, बहलाओत भाय

व्यसन, दुर्व्यसन अति बलाय
जकड़ि लेत निज जाल फैलाय

पाश अपन जँ लेत फँसाय
भेटत बाट नहि कतहु पड़ाय

कानब पुनि-पुनि मन पछताय
छूटत ने कथमपि कोनहुँ उपाय।

4

आक, धतुर नाना बिषधारक
गाजा, भाँङ-अफीम

अनुचित कए उपयोग नै करियौ
नाम हमर बदनाम

जड़ी-बूटी हम बड़ गुणकारी
जखन विधाता बाम

माहुर केर काटे छैक माहुर
जानय जनता आम

आधि-व्याधिसँ पाएब त्राण
सदुपयोगमे कोनो नै खाम।

5

परम सुन्दरी छी गुलनार
खैनी, सुरती नाम हमार

भोरे-भोरे माहुर आधार
हमरा वशमे मानुष लाचार

नव-नूतन आकार प्रकार
नाना विधिये लागल सचार

हमर धर्म-गुण बढ़ल अपार
नाना विधिये बढ़ल व्यापार

नाम भिन्न-भिन्न पड़ल हजार
सभटा थिक हमरे अवतार।

6

जगहित पीबि हलाहल शंकर
देलनि जगकेँ अमृत जीति

सगर जगत कल्याणक खातिर
भाँङ-धतुर सभ गेलन्हि पीबि

नाम धेलहुँ जँ शिव प्रसाद तऽ
महिमा नामक लियौ जानि

जीवरक्ष हित ग्रहण करी जँ
निश्चय भागत आधि-व्याधि

व्यर्थ करी जनु किछु मनमानी
बनब नशेरी लिय ई जानि।

7

इत-उत उठि चिरानि गन्हाबी
स्वासक मध्ये नशा पियाबी

स्वच्छ वायुकेँ करी अशुद्ध
अपनहि मोने बनी प्रबुद्ध

बाजै छी सभखन अनटोटल
लागय जहिना ढोल हो फूटल

अंगा पहिरी सात ठाम फाटल
कारी खटखट चिप्पी साटल

रोजगारक नहि कोनो चर्च
माँगि खाएब, नहि कोनो हर्ज।

8

बड़ रे लोभाओन मद्यक पाश
आनन्दोमे सभसँ खाश

लाख जतन करू कतोक प्रयास
कबहु ने छोड़त, जकड़त पाश

बिसराओत सभ हास-परिहास
सखा-बन्धु केर तोड़त आश

जीवनक हित नहि किछुओ खास
होयत जीवनक सत्यानाश

घेरत अंध, बिसराओत उजास
मद्यक लोभमे सभटा नाश।

9

मानुष तन अनमोल पाओल, हमसभ ई जानी
व्यर्थ गमायब ओहिना थिक बड़का नादानी

करी कोनहुँ उद्यम जँ हो अपनहुँ हितकारी
करी विचार नहि हो ककरहु लेल ओ भारी

संभव नहि परहितक कार्य जनि मन पछताबी
ध्यान रहय एतबाक ने आनक हृदय दुखाबी

मुदा विवेक हो जागल एतबा ध्यानमे राखी
मद्यक वश पड़ि जकड़ब बिसरब हित-मिताइ

बुद्धि-विवेक गमायब, बाँचत बस लाचारी
संग समाज रहित की असगर जीवन चाही!

10

जर्दा आबि ने कहलक ककरहु
मुट्ठी भरि-भरि हमरा फाँकू

फाँकि-फाँकि दिन-राति मोन भरि
अँतरी, लीवर अपन सड़ाबू

नशा कोनो नहि कहलक ककरहु
हमरहि पाशमे अहाँ बन्हाबू

हमरा वशमे पड़िकऽ हे मानुष
सौंसे दुनियाँकेँ बिसराबू

मातु-पिता संतानक संग-संग
प्राणप्रिया केर ह्रदय दुखाबू।

11

सुनू यौ मीता, सुनू समांग
अहाँ खाउ नहि कहियो भाँग

भाँग खाय जनु होउ मतंग
उड़त जीवनक सभटा रंग

अथबल कए देत सभटा अंग
सड़त आँत, पसरत दुर्गंध

हानि अपन कए बनब निर्धंध
हँसत लोक करत चौचंग

कहथि सुबुधिजन कहथिन्ह संत
मानू बात रहब आनन्द।

12

छोट-छोट सबुजरंग गछुली
चाकर-चाकर कंचन पात

एक बीत जँ उठलैक मूड़ी
झट दऽ छेकलक चारू कात

व्यसन थिक ई बुड़बक भारी
नाम एकर थिक खैनी पात

अलसल-मोचड़ल मोटरी बान्हल
अब्बल-दुब्बल सौंसे गात

रगड़ि चूनसँ ठोर तऽर दाबू
दिनहि तरेगण देखब साक्षात।

13

हरियर-हरियर छितनल पात
चटक-मटक छै रंग उजास

अकट-बकट बिष बोरल पात
कत्था-चून-सुपारी खास

रूप सजाबी, रंग निखारी
करब अहींकेर सेहत नाश

इत्र, फुलेल, केसर, दक्षिणी संग
गमकाएब जँ बोरि मिठास

अपनहि गंध पसारब चहुँदिश
करब विवेकक सत्यानाश।

14

बुद्धिवर्द्धक चूर्ण नाम दऽ
फुसियाबै सभ यार-भजार

नाच नचनियाँ नाचय छम-छम
चैनी खैनीक सजल बजार

बड़का-बड़का बैनर लागल
प्रथम पृष्ठ चमकए अखबार

नगदी केर छै सभटा खेला
भाड़मे गेल आचार-विचार

आन्हर-बहिर बनल सभ हाकिम
माथा चढ़ि नाचय सुटिहार।

15

अमल नहि थिक कोनहुँ नीक
डेबिते हरि लेत बुद्धि विवेक

सभटा मति-गति हरत क्षणहिमे
पंगु बना राखत निज वशमे

सखा-बन्धु सह कुल-परिवार
लागत दुश्मन सकल समाज

भावशून्य कए पाड़त कोण
मद्यपान बस राखब मोन

मोन नहि भावत बाल-गोपाल
करब कोना ककरहु प्रतिपाल!

16

सत्यानासी थिक ई पुड़िया
गुटखा-पुटखा पाउच आ डिबिया

लवंग-अड़ाँची दए गमकाओल
घूनक संगमे सातु पिसाओल

अवक-तवक संग पिपरमिंट
ठकलक सद्यः गवर्नमेंट

नव-नौतारक मोन भरमाओल
बालक-वृद्ध सेहो ललचाओल

माथा चढ़ि घिरियाओल काल
पिच-पिच पीकसँ जगत बेहाल।

17

भाँगक जिलेबी छैक बड़ मीठ
सेहत लेल छैक अक्कत तीत

भाँगक पेड़ा, भाँगक बर्फी
त्यागू मीता सभ मनमर्जी

नीक नाम धरि जग भरमाबए
पैसि कोंढ़मे नस्तर भाँजए

अपन प्रकृति नहि छोड़ए कखनो
चढ़ि कपार पर नाचय तखनो

मीठक लोभ विनाशक भारी
कहुना भाँग जँ परसब थाड़ी।

18

सुरा पीबिकऽ भेलहुँ मतंग
घऽर पैसि मचबी हुड़दंग

नेना, बुतरुक देखि भेल दंग
घरनी केर सभ निष्ठा भंग

लटपट डेग अछि भृकुटी उटंग
माथ चढ़ल नित नव-नव रंग

जनु कखनो आब करब उलंग
सोटि देब मदमातल अंग

घरनीक मारि उतारत दंभ
होएत सभ मनमर्जीक अंत।

19

दूध-भाँग केर अद्भुत संग
नाम पड़ल माजुम मकरंद

मद्य मिठास केर अनुपम रंग
मधुर स्वाद अतुलित आनन्द

चिंता-फिकिरक उड़बए रंग
लागय अतिप्रिय मदनानन्द

काया माया सभ बदरंग
जकरि लेल जखने ई अंग

मोहपाशमे मन प्रतिअंग
करए लाचार सभक सर्वांग।

20

सुनू-सुनू बौआ सुनू समांग
आब नहि कहियौ खाएब भांग

कहथि डाक्दर-वैद्य सुजान
साँचहि मीठ माहुर थिक भांग

नहुएँ-नहुएँ असरि देखाओत
जकड़ि पाश नाकाम बनाओत

पहिने बहिर करत दुहू कान
अंग डसत पुनि सर्प समान

भावशून्य कए हरत विवेक
पसरत भरि घर क्लेशहि क्लेश।

21

जीवन थिक अनमोल
भेटल जँ मनुषक काया

करिय कृत्य किछु नीक
लुबुधि जनु मद्यक माया

समय नापि प्रभु देलन्हि
निकती तौलि यौ भाया

आब अपन थिक स्वेक्षा
करू उपयोग कि जाया

माया केर परतापे छैक
एहि लौकिक सभ माया।

22

गाँजा, भांग, पान संग यारी
बस यैह थिक मीत-मिताई

एहि दुनियाँ केर भिन्ने रीति
अरिजन-परिजन सखा ने मीत

मद्यपान टा बस मोन भावए
अद्भुत दुनियाँमे विचराबय

मुदा पेट केर भूख जँ जागत
बिना अन्न कहू कोनाकऽ भागत

मोन पाड़ि देत सभ सम्बन्ध
होएत लाचार जखन सभ अंग।

23

मदिरा संग जहिया भेल यारी
तहियेसँ भेल जीवन भारी

एकर चहटि लत छै बड़ भारी
छूटि गेल सभ दुनियाँदारी

महुआ हँड़िया ह्विस्की ताड़ी
मोन लोभौलक बड़ भैयारी

बोली प्रियगर, हिया बड़ कारी
सौदागर मृत्युक व्यापारी

सड़ि गेल पेटक गुर्दा-अँतरी
माथ हाथ दए बैसल कुहरी।

24

साँझ-प्रात नित दम्म लगाबी
स्वर्गक सुख हम सहजहिं पाबी

गाँजा, चरस आ बीड़ी पीबी
चुरुट, सिगार, हुक्का गुड़गुड़बी

जर्दाक संग हम पान चिबाबी
चुटकी भरि-भरि सुरती दाबी

चीलम भरि-भरि पीनी पीबी
नोटक नल्ली कोकीन उड़ाबी

जामसँ जाम हम भरि टकराबी
अपनहि मद्य हम चूर शराबी

भरि-भरि दुर्गुण अंग गलाबी
अपन लहाश अपनहि हम जारी।

25

ताड़ चढ़ल तड़बैया भैया
लागी तोहरा गोर

ताड़ी केर आब दरश देखाबह
ठोर सुखायल मोर

टटका-बसिया आनह कोनो
लागल तलब बड़ जोर

कनिञा कानक बाली झिकलहुँ
चिकरी जोरसँ चोर

टाका नामे जनि दुतकारह
भरब गेंठ पुरजोर।

26

पीलहुँ शराब मोनमाफिक
बनलहुँ खराब यौ मीता

मानल नहि कहियो कोनहुँ
मृदुवचन अपन परिणीता

अपनहि हाथे अपनक हम
सुखचैन छिनल यौ मीता

सहब कतेक संताप आब
भेल शेष समय यौ मीता

पछतेने की घुरि आओत आब
पुनि मधुमय क्षण यौ मीता!

27

सद्विचार नहि कोनो सुनलियै
बुधियारी हम खूब छँटलियै

जर्दा, गुटखा खूब फँकलियै
सखा-बन्धु संग मौज मनेलियै

गलफर संगमे दाँत सड़ेलियै
भरल जवानी काहि कटलियै

डाक्दर, वैद्यक पैर पड़लियै
सूझय बाट नहि कतहु पड़ेलियै

कर्मक फल हम खूब भोगलियै
जखन विधाता बाम देखलियै।

28

तरहथ पर धऽ चून चुनाबी
थोपड़ीसँ हमरा थोपराबी

निर्गुण गाबी खूब पोल्हाबी
ठोरक तऽरमे दबने राखी

हम तिलबिखनी बड़ होशियारि
ओहिना छी हम अगिया बेतालि

मान-मनौव्वलि हम नहि जानी
सभक नाक नथुनी पहिराबी

तोड़ि दाँत गलफरकेँ सड़ाबी
जीविते नरकक भोग भोगाबी।

29

गुटखा कीनय जइहऽ हौ भैया
पहिने पढ़िहक अपन भविष्य

गुटखा केर किरदानी हौ भैया
छपल रहैत छैक दूनू दिश

किडनी, लीवर सड़तह हौ भैया
कैंसर धरतह लहक बूझि

समय रहैत तों चेतह हौ भैया
पछतेने नहि भेटतह किछु

सेहत संगहि पाइ बचाबह
नहि तऽ सभ बोकियेतह खूब।

30

आनन्दक क्षण व्यर्थ गमाओल
फूँकि चरस, गांजा संग पीनी

कोंढ़ जराओल, किडनी साड़ल
रहि-रहि अपने मोन पछताबी

जीर्ण-शीर्ण जर्जर तन बाँचल
अपने अप्पन फूकल जुआनी

वचन नहि माय-बाप केर मानल
कएल सदति नादानी

आबह आबह सभ नवतुरिया
देखह हमर किरदानी।

31

सोमरसक आनन्दमे
डूबल छी आकण्ठ

पल-पल पड़लहुँ लोभमे
विचरब हम बैकुंठ

देव-दानवक बीचमे
झगड़ा भेल प्रचण्ड

पीबि लेलन्हि सभ सोमरस
बाँचल नहि किछु अंश

जुनि अधीर हो रे मना
मदिरा पी भरि छाक

देलन्हि अछि वरदानमे
शिवशंकर घट सोम।

32

आउ आइ किछु चिंतन करियौ
हीत-मीत केर मोनकेँ पढ़ियौ

सोच-विचार नीकसँ करियौ
कोनाकेँ व्यसनक बाट जोहलियै

संगी-साथी मोन उधकौलक
पकड़ि ठोरमे खैनी ठुसलक

बेरि-बेरि मोन भेल बिषाइन
पकरि कंठमे ढारलक वाइन

आउ मीत हम खाधिमे धँसलहुँ
घीचि अहूँकेँ संग लऽ चललहुँ।

33

गाँजा पीलहुँ, बीड़ी पीलहुँ
आओर खेलहुँ हम भाँगक पू

हाल बिसरलहुँ, चालि बिसरलहुँ
बिसरि गेलहुँ हम अपन भू

ताड़ छू, तड़बोन छू
इन्द्रकेँ सिंहासन छू

भागि-दौड़िकऽ हम छड़पलहुँ
इन्द्रक कानमे कहलहुँ कू

नशा जँ कनिञे उतरल मीता
चुप्प मुँह नहि निकलल चूँ।

34

खैनी पातक चतरल गाछ
पसरल सौंसे बाधे-बाध

माल-जाल, बकरी, बोन गदहा
खाइ ने ओकरा कोनो खरहा

देखिते भागय दोसर कात
भलहि भूखसँ ऐंठल आँत

गुण-अवगुण पशुओकेँ जानल
निखिद-निषेध कठिन व्रत ठानल

मनुष टेढ़ अछि अपन गुमान
खाय अखाद्य अवडेरने जान।

35

बुद्धिवर्धक जनि कहू हमरा
हम छी बुद्धि नाशक चूर्ण

सेविते हमरा नहुएँ-नहुएँ
बनि जाएब सभ अमरुष पूर्ण

सदाचार बिसराकेँ सभटा
कदाचार गहब परिपूर्ण

काज-रोजगार छोड़िकऽ सभटा
मिथ्या भाषन झाड़ब पूर्ण

बिनु हमरे नहि होएत गुजारा
जीवन गार्त करब सम्पूर्ण।

36

हम भाँग छी सुनू भैयारी
हमरा अछि मिथिलासँ यारी

सभ गुणिजन पर हमहीं भारी
युवक, वृद्ध, तरुण नर-नारी

सभकेँ अप्पन दास बनाबी
जकड़ि पाश सभकेँ लेपटाबी

छोड़ि सकल निज रज-रोजगारी
स्वप्नलोक सदिखन विचराबी

सभसँ पहिने भीख मंगाबी
जीवन भरि पुनि थूक चटाबी।

37 (क)

कहू यौ मीता कोना करै छी
सफल परीक्षा केर तैयारी

आईएएस हो वा मेडिकल
रटी कोना प्रश्नोत्तर भारी

सुनू यौ मीता गप गूढ़ अछि
मूलमंत्र दर्पणमे छपल अछि

निन्न कोना भागत से नुस्खा
चैनी-खैनीक छाप ओतहि अछि

धुर जाउ मीता, अहूँ केहन छी
व्यसनकेँ नुस्खा नाम धेने छी।

37 (ख)

सुनू-सुनू प्रतियोगी भाइ
कबहु व्यसनकेँ ने मीत बनाबी

दिनचर्याकेँ शोधल राखी
प्राणायाम संग योगा साधी

अपन आश पर करी पढ़ाइ
व्यसन पालने बढ़त बीमारी

आलस बढ़त, बढ़त लाचारी
करब कोनाकऽ कोनो चाकरी

अफसर बनी वा करी मजूरी
खैनी, गुटखा सभपर भारी।

38

गुल, गुड़ाखू, बीड़ी, हुक्का
लागल सभकेँ हमरे तुक्का

धुआँ उड़ाबू भरि-भरि कुप्पा
दाँत घसू गुड़गुड़बू हुक्का

जाम करब हमहीं सभ चक्का
सभ विधि चलतै हमरे सिक्का

मानुष तन हित सोचियौ कक्का
अहूँ फँकै छी हमरे फक्का

खर्च करब जँ कतबो टक्का
आधि-व्याधिमे हक्का-बक्का।

39

सुनियौ नीतिश सुशासन बाबू
करू नशेरी सभकेँ काबू

मदिरा पीबिकऽ भेल बेकाबू
दाँत मँजै छथि नित्य गुड़ाखू

बनबै छथि कानून जे बाबू
तोड़थि अपनहि बैसि तराजू

घर-घर गमकय महुआ दारू
पीबि गमौलक प्राण बेगारू

देखि-देखि कृत्य नित्य निज बाबू
हकन कनै छथि नेना-बुतरू।

40

बाबू यौ हम ब्याह नै करबै
कोनो नशेरी जोहि जँ अनबै

जीवन भरि हम काहि ने कटबै
परहित लागि सुकारज करबै

अबल-निबल सहायक बनबै
बूढ़-पुरानक सेवा करबै

देशक हितमे प्राण गँमेबै
रहि स्वतंत्र अकाशे उड़बै

नशामुक्ति केर बाट देखेबै
आधि-व्याधिसँ मुक्ति दियेबै।

41

वर जोहि जँ लाएब शराबी
नहि हम बूझब कोनो लाचारी

अफसर होउ वा करय मजूरी
सद्आचारक महिमा भारी

धीया हम थिकहुँ मिथिलानी
रघुवर राम सनक वर चाही

राज-पाट बहुरत्न जखीरा
नहि चाही धन सम्पत्ति मोरा

सियशक्ति सम सुअवलंबी
छी हमहुँ मिथिलेक कुमारी।

42

प्राणप्रिय पहुँ आबहु सुनियौ
बीड़ी, गुटखा आबहु छोड़ियौ

राग-रंग नहि बुझलहुँ कहियौ
मद्यक पाशमे तेहन जकड़लौं

घर-परिवारक मोह बिसरलौं
नेना सभ केर नेह बिसरलौं

अपटी खेत ने प्राण गँमेबियौ
अपना जीवक कनिञो सोचियौ

मानुष तन अनमोल जे पेलौं
व्यर्थ ने एकरा अहाँ गमबियौ।

43

जागहु हे शिवशंकर भोला
दुनियाँमे पसरल अछि खेला

भक्त मगन अछि पिबिक' गाजा
शंकरामाइसिन भाँगक गोला

नाम अहीं केर भजबए भोला
आबहु जागहु हे नटराजा

गरल पीबि अमृत जे जोहलहुँ
तकरो केलनि अकारथ काजा

आधि-व्याधि हित अमिय समान
मंदबुद्धि लेल व्यसनक माला।

44

प्राणप्रिय मोर पति परमेश्वर
कामना प्रियसँ चाहिय आदर

सदति नशामे धुत्त पबै छी
तें करैत छी प्रियकेँ निरादर

प्रिय हमरहुँसँ ताड़ी, दारू
एहन कोना प्रभु भेलियै निष्ठुर

प्रियगर मिठगर बोल बिसरिकेँ
चलबी लाठी, डंडा, थापड़

प्रेमक फल जे पाओल दुहु मिलि
सेहो भेल अछि आगर-बागर।

45

बनल गुलाबी गेंग शहरमे
पीटय थाड़ी, लोटा, बाटी

कसल नकेल शराबी सैंयाँ
बदलि सोच निर्भय भेल लाली

लोक लाज तेजि प्रण सभ ठानल
मोह जाल केर छान छोड़ाइ

रंग-रभस सभ मोनहि मारल
हक-अधिकारक बाजय बोली

लोकलाज झूठक आडम्बर
तोड़ि पाश चलिल सभ नारी

46

सुनियौ सुनियौ नीतिश भैया
राज्य बिहारक सिद्ध खेबैया

दारू भट्ठी रमण-चमन बड़
बोतल गनि की पाएब भैया

गुटखाक मील फड़य-फूलय
कायल छथि खुदरा बिकबैया

महुआ गाछपर लगलै पहरा
भाँगक गमकै हरियर बगिया

मुखशुद्धि रजनीगंधा संग
खैनी पातक गमकै पुड़िया।

47

दृढ़ संकल्पित भए किछु सोचू
नशाक दुर्गुण आबहु त्यागू

सखा नशेरी केर संग छोड़ू
भक्ति-भजनमे आबहु लागू

बाल-गोपालक लीला देखू
नेना बनि पुनि नेना खेलाबू

प्रियगर जीवन मीता बन्धू
छल हेरायल फेरसँ ताकू

संग सखा सम्बन्धी जोड़ू
मधुमय जीवन आनन्द पाबू।

48

आउ बन्धुगण शपथ खाइत छी
नशामुक्ति केर बाट चलै छी

देश प्रेम हियमे जगबै छी
सभ जन-जनमे स्नेह बँटै छी

घृणा-द्वेष मद्यक उपजाओल
प्रेमक आगिमे भष्म करै छी

चोरि-छिनरपन, लुच्चइ-गुंडइ
त्यागि आचरण शुद्ध करै छी

अकर्मण्यता मद्यक देलहा
तेजि देशहित काज करै छी

49

भाँग खाय भकुआइ बैसल छी
करब कोना कोनहुँ रोजगार

देह शिथिल आ मोन शिथिल अछि
केलक भाँग सर्वांग लाचार

क्षणिक सुखक असिमित मृगतृष्णा
फोलि देलक अछि नरकक द्वार

भावशून्य भए कतहु पड़ल छी
सुनि-सुनि आब सभक दुत्कार

सुनू बन्धुजन आबहु चेतू
व्यर्थहि जीवन करब बेकार

भाँगक वशमे पड़लहुँ जखने
बिसरि गेलहुँ आचार-विचार।

50

विश्वक नशा निरोधक दिन अछि
सुनू बन्धुगण छब्बीस जून

अपन बिहारक भाग्यविधाता
जनहित लेल गढ़ल कानून

नशामुक्ति हित होअय सुकारज
समुचित कृत्ये पओताह पून

जनमानसमे हो खुशहाली
रहय निरोगी स्वच्छ हो खून

रोग-व्याधि नहि गरसय ककरो
औरदा सभकेँ बढ़य दुगूण।

51

छब्बीस जून थिक नशामुक्ति दिन
करियौ कनेक विचार

तन-मन दुनू शुद्ध जँ राखब
रहत शुद्ध आचार

गुटखा, मदिरा, सिगरेट, बीड़ी
नशा सभ तन करत लाचार

जीविते नरकक भोग भोगाओत
चहुँदिश करत अन्हार

कुहरि-कुहरि दिन जोहब मृत्युक
पीटब अपन कपार।

52

अपना अंग लेल अपनहि सोचू
दियौ मान-सम्मान

कंचन काया, मधुमय जीवन
थिक देवक वरदान

धुआँ पीबि जनु जारू ई तन
दुःख सहत नहि कियो आन

करनीक भरनी अपनहि भोगब
जानथि सुबुधि सयान

गढ़लनि जे तन देव जतनसँ
देताह दण्ड भगवान।

53

चरस पीबि मातल हम भटकी
जोही चहुँदिश स्वर्गक द्वार

स्वर्गक चाहमे व्यर्थ गमाओल
देलन्हि जे जीवन सरकार

मानव तन अनमोल कृति थिक
योनि चौरासी लाख हजार

ओहि तनकेँ अमरत्वक खातिर
धुआँ पीबि तन केलहुँ लाचार

समय गमा पुनि-पुनि पछताबी
आँखिक नोर डुबल संसार।

54

गुटखा खेलियै चुप्पेचाप
सड़लै जबड़ा बाप रौ बाप

करियै कोन उपाय आब हम
किछु नहि फूरय बाप रौ बाप

डाक्दर-वैद्यकेँ जोड़ल हाथ
जबड़ा कटलक बाप रौ बाप

देलन्हि विधाता कंचन काया
सेहो गमेलियै बाप रौ बाप

धनक संगहि समांग गमौलियै
माथा धुनै छी बाप रौ बाप।

55

मीत अहाँ जँ छी बड़ प्रियगर
देब सदति किछु नीक विचार

मद्यक लोभमे जनि लुबधाबी
शुद्ध करी आचार-विचार

कटुवचन जँ कहब हमर हित
तकरे अछि हमरा दरकार

झूठ कहब मधु बोरल-बोरल
कथमपि नहि हमरा स्वीकार

मीत वैह थिक सत्य कहै छी
मीतक हित करय व्यवहार।

56

खैनी पातक बड़ विन्यास
उपजाबय सभ चासक-चास

बहुविधि लोक करय व्यापार
रूप-रंग सभ खाशमखाश

पुड़िया, डिब्बा, बोतल बन्द
गमकै सभटा आसहि पास

दमड़ीक पाछू चमड़ीक त्याग
बरू देहक भेल नाशहि नाश

संस्कारक छैक कोन बेगरता
लोको लाजक सत्यानाश।

57

आयल बसंत, बरिसल आनन्द
बहय बसात मदमस्त

चलू पीबि भंग गाबी बसंत
उड़बी अबीर सभरंग

टकराबी जाम छिलकाबी जाम
मिलबै छी नैनसँ नैन

गोरीक संग बरजोरि आब
मचबै छी खूब हुरदंग

मद्यक वशमे भेल चैन भंग
पड़ि गेल रंगमे भंग।

58

हवा बसंती मधुमय-मधुमय
रंग-अबीरसँ रमणय-रमणय

रंगमे भंग जँ घोरि देबैक तऽ
सभ नशामे घुरमय-घुरमय

नशा पीबि मदमस्त भेलहुँ तऽ
बुद्धि-विवेको भरमय-भरमय

मधुमय फगुआ बड़ मनभावन
कियैक मीता झगड़य-झगड़य

नशा त्यागि देखियौ यौ मीता
प्रेम सुधा-रस बरिसय-बरिसय।

59

कनक क्षुधा केर नाश करैत अछि
मानव तन समृद्ध रखैत अछि

कनक क्षुधा सभकेर जगबैत अछि
मोन-मगज पराधीन करैत अछि

एक अमिय थिक पोषक भारी
दूजा बिष नाशक   हितकारी

दूनू केर अजगुत महिमा अछि
एक दूजापर दूनू भारी

शिव नन्दीक आशीष अमरफल
महिमा शिव केर जानथि गौरी।

60

चललहुँ हम दुनियाँ त्यागि प्रिय
भए सकए त' हमरा माफ करब

प्रिय मातु-पिता, बन्धु-जाया
अपराध हमर सभ माफ करब

पड़ि मद्यक वश लाचार भेलहुँ
अपटी खेत पड़लहुँ माफ करब

हम जानि-बूझि बिषपान कयल
तकरे फल थिक सभ माफ करब

लिय शपथ ने क्यो मद्यपान करब
दुर्गति देखि हम्मर प्रण ठानब।

61

आउ मीत मिलि सप्पत खाइत छी
गुटखा-खैनी बारि लैत छी

आदति जहिना धेलियै सभ मिलि
तहिना संग मिलि त्यागि लैत छी

रोग-व्याधि सभ आबिकऽ घेरत
बुझू अछियेपर बैसल छी

कर्मक फल अछि खटगर-तिखगर
उपजाओल सद्यः अपनहि छी

सुधरब जँ नहि आबो मीता
बुझू पशुओसँ बदतर छी।

62

दंभ त्यागि किछु चिंतन करियौ
पौरुषता नहि व्यर्थ गमबियौ

मद्य सनक उनमादी तत्वक
बूझि-गूणि नहि सेवन करियौ

फूसिक जोशमे होश गमा पुनि
झूर-झमान आब नहि होइयौ

पछतेने नहि भेटत किछुओ
आबो बुद्धि-विवेक जगबियौ

मदिरा, गुटखा सन विषधारक
धूम्रपानकेँ टा-टा कहियौ।

63

हे जननी, हे माँ अन्नपूर्णा
सृष्टिक पालक हे जगमाता

शक्ति स्वरूपिनि हे जगत्राता
विद्या वारिधि भाग्यविधाता

हे रंभा मृदुभाषिनि भार्या
जीवन संगिनि हे प्रियमीता

सभ रूपमे अहीं निबाही
सत्कर्तव्यक पथ विख्याता

अहीं नशा जँ करब आधारा
दुनियाँ केर के बनत सहारा!

64

काँच कली सन अहाँ सुकोमल
अहाँ कोनाकऽ डेबब अम्मल

कंचन काया होयत श्यामल
धूम्रपान मदिराक झमारल

अधर मध्य जँ गेल तमाकुल
मृदु वचन तजि बाजब अर्रोठल

मृगनयनी नयना मदमातल
छुपत पलक बीच बोझल-बोझल

मधुरस छाड़ि कटू रस बरिसत
कोमल बदनमे फोका दड़रत।

65

हे किशोर सुनू प्रिय किशोरी
नशाक लति अहाँ जनि अपनाबी

छी राष्ट्रक प्रतिनिधि भविष्यक
नशामुक्ति दिश डेग बढ़ाबी

कमलक दल सन बदन सुकोमल
धूम्रपान कए जनि ई डाही

राष्ट्रक हित किछु धर्म-कर्म कए
मानव जीवन अमर बनाबी

जीवन धन अनमोल रतन थिक
मद्यक पाशमे जनु ओझराबी।

66

दादी, नानी, पीसी, मौसी
सुनू-सुनू सुनियौ मोर भौजी

धूम्रपान थिक बड़ दुःखदायी
अहाँ ने कहियो बीड़ी पीबी

स्मैक, सिगरेट, गाँजा, पीनी
डाहत कोंढ़ सुनू यै दीदी

जनि कहियो हुक्का गुड़गुड़बी
नर्कमे ठेलत सत्ये जानी

धऽ लेत खोंखी, दम्मा, टीबी
घून लगाओत भरल जुआनी।

67

आब ने खैनी माँगब मामा
सत्य वचन नहि कोनो बहाना

खैनी केर सभ महिरम बुझलहुँ
आँखि अछैते खाधिमे खसलहुँ

भरल जुआनी काहि कटै छी
पोन लगा हम नोर पोछै छी

अपनहि अरजल कर्क बेमारी
बिपत्ति पड़ल अछि बड़का भारी

बाँचब आब न कोनो उपाय
नोन, तेल सभ देखल पढ़ाय।

68

बौआ रे तों बड़ पकठोसल
बात बजैत छें ठोकल-ठोकल

दम्म लेल छें आकुल-ब्याकुल
ठोर ठुसैत छें सदति तमाकुल

धुत्त रहैत छें पीबिकऽ बोतल
कतहु पड़ल छें मातल-मातल

अपना तनपर अपनहि शासन
तखन बुद्धि कतय छौ भासल

करनी केर फल दैत छै काल
रोकत से छैक ककर मजाल!

69.

गीत सुनू वा सुनू नचारी
मद्यक वशमे दुनियाँदारी

आयल विपतिया कतबो भारी
मद्यकाल छै सभपर भारी

सुख सुमिरी कि दुःख बिसराबी
भरि गिलास हम मदिरे पीबी

चढ़ि मचान बैसल व्यापारी
बूझय सभ मनुषक लाचारी

आयल जमाना केहन गे माइ
छूछ देखाँउसक दुनियाँदारी।

70

स्वाद चिखलियै खेल-खेलमे
संगी सभकेर मेल-मेलमे

चहटि एकर आब बनि गेल काल
थिक शराब जीवक जंजाल

माय-बाप-सम्बन्धी छूटल
धन-सम्पदा सभटा लूटल

रोग भयंकर लागल भारी
सहजहि छूटल दोस्ती-यारी

सुनियौ मीत सखा-सम्बन्धी
अपने करनी मोन पछताबी।

71

शराब केर विनाशसँ
समाजकेँ बचाउ ने

विपक्ष-पक्ष संग भऽ
उठू विवेकशील बनि

प्रबुद्ध शुद्ध विचार ई
चलू क्रियान्वित करी

नशा घिनौन कुष्ठ थिक
समूल नष्ट कए चली

स्वस्थ निज समाज हो
अटल विचार लए चली।

72

मिठका माहुर कियैक खाइत छी
रोग-व्याधि हकारि अनैत छी

धनक संगहि स्वास्थ्य गमाकऽ
धोल-धोंछ कत्तहु बैसल छी

पछतेनहुँ नहि घुरिकऽ आओत
मधुर दिवस जे बीति गेल अछि

समय अछैत चित्त साधि लितहुँ जँ
दरदक शूलि ने कहियो चढ़ितहुँ

नशाक लति थिक सत्यानाशी
सर्वनाश लतिक निश्चित अछि।

73

हे जगदम्ब गोहारि करू
अयलहुँ दुआरि माँ कृपा करू

हे जगजननी दियौ सुमति मति
नेना सभक भेल अछि दुर्गति

मिनती मैया लियौ स्वीकारि
हाथ जोड़ि माँ ठाढ़ छी दुआरि

नशाक दुर्गुण दूर करू माँ
नेना कहय पुकारि

अहाँ ने सुनबै हे माँ भैरवि
भए निराश बैसब मोन मारि।

74

हे शिवशंकर, हे शिवजोगिया
सजल नयनसँ तकियौ ने

जीवन-पथ सभ भटकल भोला
आबो बाट देखबियौ ने

मद्य-मोह सभ डूबि रहल अछि
आबिकऽ आब उबारियौ ने

हे बमभोला आश अहींकेर
भक्तक आश पुरेबियौ ने

नशामुक्ति केर अलख जगबियौ
कृपा सुधा बरसबियौ ने।

75

हे माँ काली खप्पड़वाली
दुर्गुण मर्दन करियौ ने

नशाक वश अछि जन-जन भटकल
महिषासुर बनि भरि जग पसरल
बुद्धि-विवेक गमाओल सभटा
असुरनिकंदनि सुनियौ ने

हे माँ...
आश-भरोस तोड़ि सम्बन्धक
जीविते बनि बैसल अछि मुर्दा
माय धरापर भार बनल अछि
सद्गति पथ दर्शबियौ ने
हे माँ काली...।